8 मुगलकालीन जन–जीवन

पिछले पाठों में आपने मुगलों के शासन के बारे में पढ़ा। इस पाठ में हम मुगलों के समय में सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक और धार्मिक जीवन में आए बदलावों के बारे में पढ़ेंगे।

मुगलकाल में भारत पूरी दुनिया में एक सम्पन्न देश के रूप में प्रसिद्ध था। इसी संपन्नता से आकर्षित होकर विश्व के अनेक देशों के लोग यहाँ आए। यूरोपीय व्यापारी भी व्यापार के माध्यम से धन कमाने के लिए यहाँ आए, जिन्होंने बाद में भारत पर अपना शासन जमा लिया।

सामाजिक स्थिति

मुगलकालीन भारतीय समाज में बादशाह एवं उनका परिवार, राजपूत राजा सबसे धनवान और ताकतवर लोग थे। मुगल दरबार में शासन का सर्वोच्च बादशाह होता था जो अत्यंत वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करता था।

अमीर

अमीर राजा के दरबार में ऊँचे पदों पर आसीन लोगों को कहते थे। ये मंत्री, सेनापति, प्रांतपति जैसे प्रमुख कामों को देखते थे। इन्हें इनके कामों के बदले कई गाँवों की जागीर दी जाती थी। गाँवों से प्राप्त लगान का अधिकांश भाग इन्हें मिलता था। वे भव्य महलों में रहते थे और शानो–शौकत से जीवन बिताते थे। ये अमीर तुर्क, ईरानी, हिन्दुस्तानी मुसलमान व राजपूत राजा होते थे।

मध्यमवर्ग

शहरों में एक बड़ा वर्ग मध्यम वर्ग का था जिसमें छोटे अधिकारी, सैनिक, व्यापारी आदि होते थे। कुछ व्यापारी तो बहुत धनवान थे।

गाँव में जमींदार बहुत ताकतवर थे। वे लगान इकट्ठा करने में शासन की मदद करते थे और जरूरत पड़ने पर किसानों की बात शासन तक पहुँचाते थे। वे किसानों से लगान के अतिरिक्त तरह–तरह की वसूलियाँ भी करते थे।

इनके बाद किसान, कारीगर, दलित वर्ग, सेवक आदि आते थे। इस वर्ग की संख्या बहुत अधिक थी। ये लोग प्रायः गरीबी में जीवन बिताते थे। समाज में सबसे ज्यादा शोषण इसी वर्ग का होता था। जमींदार तथा जागीरदारों के अत्याचारों का भी इन्हें सामना करना पड़ता था।

छत्तीसगढ़ में

इस काल में भी छत्तीसगढ़ में कल्चुरियों का शासन था। समाज में ब्राह्मणों को ऊँचा स्थान प्राप्त था, क्योंकि ये धार्मिक कार्य (पुरोहिती) एवं शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते थे। राजाओं के द्वारा इन्हें गाँव–के–गाँव दान दिया जाता था। क्षेत्रीय शासक और योद्धा होते थे। शेष अन्य वर्गों को भी समाज में उचित स्थान प्राप्त था। इस तरह छत्तीसगढ़ में सामाजिक भेदभाव नहीं दिखाई पड़ता था।

हिन्दू और मुसलमान पुरुषों की पोशाकें आमतौर पर एक जैसी ही होती थीं। शहर एवं गाँव में लोगों के पहनावा में सामान्यतः अंतर था।

विभिन्न त्यौहार, मेले तथा उत्सव

वर्तमान समय में हिन्दू और मुसलमान स्त्रियों की पोशाकों में क्या अंतर है? चर्चा कीजिए।

त्यौहार, मेले तथा उत्सव भी मुगलकाल में बहुत मनाए जाते थे। हिन्दू तथा मुसलमान त्यौहारों को मिलकर मनाते थे। उस समय के प्रमुख त्यौहार थे–दशहरा, दीपावली, होली, ईद, नौरोज, मुहर्रम आदि। अकबर के समय में सभी प्रमुख हिन्दू और मुसलमान त्यौहार दरबार में भी मनाये जाते थे। इसमें बादशाह भी भाग लेते थे।

दिल्ली, आगरा लखनऊ आदि बड़े शहरों में तरह–तरह के मेले लगते थे, जिनमें बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते थे। प्रतिवर्ष विभिन्न सूफी संतों की मजारों पर उर्सों का आयोजन किसी त्यौहार से कम नहीं होता था। इन सबके अतिरिक्त बादशाह की वर्षगाँठ, शाही परिवार में विवाहोत्सव आदि भी धूमधाम से मनाया जाता था।

धार्मिक स्थिति

मुगल सम्राट इस्लाम धर्म के अनुयायी थे। किंतु वे सभी धर्मों का आदर करते थे। बादशाह अकबर और जहाँगीर ने दूसरे धर्मों को जानने समझने तथा उसकी अच्छी बातों को सीखने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने हिन्दू साधु, पारसी व जैन मुनि, ईसाई पादरी तथा मुस्लिम मौलवियों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। उनसे स्वयं बातचीत की बल्कि उनकी आपस में बातचीत भी करायी जिससे कि वे एक दूसरे के धर्म को जानें। उसने अलग–अलग धर्मों के ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया ताकि सभी लोग सभी धर्मो की अच्छी बातों को समझ सकें। यही प्रवृत्ति समाज के आम लोगों में भी फैली और वे भी एक दूसरे के धर्म को जानने – समझने लगे। इसी काल में तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, मीरा बाई, रहीम, गुरूनानक एवं छत्तीसगढ़ में गोपाल मिश्र जैसे भक्त कवि हुए जिन्होंने सभी धर्मों का आदर करना सिखाया।

मुगलकाल में ही छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ का आगमन हुआ। छत्तीसगढ़ के गाँव–गाँव में कबीर पंथ का प्रचार हुआ, जिससे यहाँ का जन जीवन प्रभावित हुआ। रायपुर बिलासपुर मार्ग पर रायपुर से 55 किलोमीटर दूर स्थित दामाखेड़ा कबीर पंथियों का प्रमुख तीर्थस्थल है। इस समय कल्चुरियों के शासन काल में छत्तीसगढ़ में देवी पूजा (शक्ति पूजा) प्रारंभ हुई जो पूरे राज्य में फैल गई ब्राह्मणों का इसमें विशेष योगदान था वे राजगुरु, ज्योतिषी, तांत्रिक एवं पुरोहित थे। महामाया (रतनपुर) के अतिरिक्त बमलेश्वरी देवी (डोंगरगढ़) और दंतेश्वरी देवी (दंतेवाड़ा) शक्ति पूजा एवं राजीवलोचन (राजिम), दूधाधारी मंदिर, रायपुर श्रद्धा केन्द्र के रूप में स्थापित हुए। गाँवों में मातादेवाला का विशिष्ट महत्व रहा है।

आर्थिक स्थिति

भारतीय समाज पहले की तरह मुगलकाल में भी कृषि प्रधान ही था। लेकिन इस समय यहाँ के किसान परम्परागत फसलों के साथ–साथ कुछ नई फसलें भी उपजाने लगे थे। मुगलकाल से पहले तक भारत में आलू, कद्दू, टमाटर, मटर आदि सब्जियाँ नही होती थी। ये सब दक्षिण अमेरिका की सब्जियाँ हैं, जिन्हें भारत में लाने का श्रेय यूरोप के व्यापारियों को जाता है। ये सभी फसलें भारत में मुगल काल में ही प्रचलित होने लगीं थीं।

किसानों की उपज का एक बड़ा हिस्सा लगान के रूप में चला जाता था। अकबर के समय में किसानों से फसल का एक तिहाई भाग लगान के रूप में लिया जाता था लेकिन धीरे–धीरे यह

मात्रा बढ़ती गई। इसके अतिरिक्त जमींदारों द्वारा कई तरह की वसूलियाँ भी की जाती थीं। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति खराब होती गई तथापि जिन क्षेत्रों में उत्पादन अच्छा था वहाँ लोग संपन्न थे।

व्यापार

इस समय खेती के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में कपड़ा उद्योग का विशेष विकास हुआ। ढाका की मलमल, बनारस की जरी का काम, बंगाल, बिहार व गुजरात के सूती वस्त्र, कश्मीर के ऊनी कपड़े विश्व प्रसिद्ध थे।

प्राचीन काल से ही भारत के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर व्यापार होता था। बाहरी देशों से भी भारत के व्यापारिक संबंध थे। विदेशों के व्यापारी भारत से अधिकतर सूती कपड़े, नील, अफीम तथा काली मिर्च ले जाते थे तथा इन वस्तुओं के बदले में सोना, चाँदी, कच्चा रेशम, मखमल आदि वस्तुएँ भारत लाते थे।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में पूर्तगाल, इंग्लैंड तथा फ्रांस के व्यापारी भारत आए। यूरोप के देशों के ये सभी व्यापारी समुद्री मार्ग से भारत आ रहे थे। सन् 1498 ई. में पुर्तगाल के एक नाविक **वास्को डी गामा** ने यूरोप से भारत तक के समुद्री रास्ते की खोज की थी। भारत के व्यापारियों ने यूरोप के इन व्यापारियों का स्वागत किया, क्योंकि इनके आने से भारत का यूरोपीय बाजारों से सीधा संपर्क स्थापित हो गया।

कला एवं साहित्य

भारतीय कला के इतिहास में मुगलकाल विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इस काल में वास्तुकला, चित्रकला, संगीत और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुआ।

मुगलकाल में भारतीय वास्तुकला (भवन निर्माण कला) में अद्वितीय प्रगति हुई। मुगलकालीन वास्तुकला में पारंपरिक भारतीय कला तथा ईरानी व मध्य एशियाई कला का सुंदर मिश्रण दिखाई

चित्र–8.1 ताजमहल आगरा

देता है। इमारतों का अनुपात, भव्यता तथा सुंदरता और इमारतों के चारों ओर उद्यान इस कला की विशेषता है। ऊँचे चबूतरे पर बनी इमारतों के निर्माण में लाल एवं सफेद संगमरमर के पत्थर, फूल–पत्तों की नक्काशी, इमारतों के पत्थरों में नक्काशीदार जाली, दुहरे गुंबद, अर्द्ध गुम्बद आदि मुगलकालीन इमारतों की विशेषताएँ हैं।

चित्र–8.2 बुलंद दरवाजा, फतेहपुर सीकरी

दिल्ली स्थित मुगल बादशाह हुमायूँ का मकबरा फारसी व भारतीय स्थापत्य कला का मिश्रण है। अकबर ने फतेहपुर सीकरी का प्रसिद्ध नगर बसाया तथा आगरा में लाल किला बनवाया। उसने फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा, जामा मस्जिद तथा शेख सलीम चिश्ती का मकबरा बनवाया। आवासीय भवनों में पाँच मंजिलोंवाला स्तंभों पर आधारित खुला हुआ पंच महल एवं व्यक्तिगत विचार–विमर्श के लिए बना दीवाने–ए–खास अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

शाहजहाँ के काल में वास्तु रचना के लिए सफेद संगमरमर का उपयोग किया गया। उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की स्मृति में आगरा में विश्व प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण कराया। यह भव्य होने के साथ अत्यंत सुंदर है। संगमरमर की दीवालों पर फूल पत्तों की नक्काशी है जो रत्नजड़ित है। ताजमहल के चारों ओर विस्तृत उद्यान है। शाहजहाँ का शासनकाल सुन्दर इमारतों, मयूर सिंहासन तथा कोहिनूर हीरे के लिए भी याद किया जाता है।

मुगलों ने जलस्रोतों से युक्त कई सुनियोजित बगीचे भी लगवाए। जहाँगीर को बाग लगवाने का शौक था इसमें कश्मीर का निशातबाग, पंजाब का तंजौर बाग और लाहौर का शालीमार बाग प्रसिद्ध है। बहते पानी का उपयोग करना मुगलकाल की विशेषता थी। मुगलों ने जगह–जगह सुन्दर फव्वारे भी बनवाए।

चित्र–8.3 लालकिला दिल्ली

शाहजहाँ ने दिल्ली में जामा मस्जिद और लालकिला बनवाया। आज भी हम अपने राष्ट्रीय उत्सवों के समारोह इसी किले के परिसर में आयोजित करते है। इस किले में दीवान–ए–खास तथा दीवान–ए–आम विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। औरंगजेब के समय औरंगाबाद एवं अन्य स्थानों में भी कुछ निर्माण हुए। गोंडवाना एवं छत्तीसगढ़ में भी मध्यकालीन कला का विकसित एवं समन्वित रूप दिखाई देता है। गढ़ा मंडला एवं रतनपुर इसमें प्रमुख रहे हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मुगलकाल में शासन का सर्वोच्च.....होता था ?
2. मुगलकाल में छत्तीसगढ़ में.....वंश का शासन था।
3. .....मुगल काल के लोगों का मुख्य व्यवसाय था।
4. दिल्ली के लाल किला का निर्माण.....ने कराया था।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सत्रहवीं शताब्दी में किस उद्योग का विशेष विकास हुआ ?
2. बहते पानी का उपयोग करना किस काल की विशेषता थी ?
3. बादशाह अकबर की राजधानी कहाँ थी ?
4. सफेद संगमरमर का प्रयोग किसके काल में किया गया ?
5. मुगल सम्राट व्यक्तिगत विचार–विमर्श किस स्थान पर करते थे ?
6. प्रसिद्ध शालीमार बाग कहाँ है ?
7. मुगलकालीन समाज कितने वर्गों में बँटा था ?
8. मुगलकालीन वेशभूषा कैसी थी ?
9. मुगलकानीन व्यवसाय क्या–क्या था ?
10. मुगलकाल में कौन–कौन–से त्यौहार बनाये जाते थे ?
11. मुगलकाल में छत्तीसगढ़ में सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का वर्णन कीजिए।
12. मुगलकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएँ लिखिए।

योग्यता विस्तार–

मुगलकाल में निर्मित इमारतों के चित्र इकट्ठा कीजिए और इनको बनवाने वाले शासकों के नाम एवं तिथि का उल्लेख कीजिए।